वर्ष :03
अंक : 02

यूको मासिकी

अंचल कार्यालय भागलपुर की मासिक पत्रिका

मई 2021

यूको बैंक UCO BANK

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
HONOURS YOUR TRUST

यूको बैंक मना रहा है 77 गौरवपूर्ण वर्ष 1943-2020

यूको मासिकी भागलपुर

वर्ष : 03, अंक : 02, मई 2021

सक्षम हैं हम, जीतेंगे हम

यूको मासिकी

इस अंक में...

- अंचल प्रबंधक का संदेश - 3
- डिजिटल उत्पादों में शाखाओं का प्रदर्शन - 4
- कोरोनाकाल में हिन्दी - 4
- डिजिटल उत्पादों व सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में शाखाओं का प्रदर्शन - 5
- कविता - 5
- एटीएम जारी करने मे शाखाओं का प्रदर्शन - 6
- शाखाओं / कार्यालयों मे आतंकवाद विरोधी प्रतिज्ञा - 6
- यूको सेकयोर - 7
- हिमालय का कवि (गोपाल सिंह नेपाली) - 8-10
- सौन्दर्य बनाम सौन्दर्यता - 11
- अलटरनेट डिलीवरी चैनल - 11-12

***

अंचल कार्यालय भागलपुर से प्रकाशित की जाने वाली नियमित पत्रिकाएं

यूको दैनिकी
सभी कार्यदिवसों में

यूको मासिकी
मासिक आधार पर

यूको अंगिका
छमाही आधार पर

यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम) UCO BANK (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का HONOURS YOUR TRUST

यूको बैंक बना रहा है 77 गौरवपूर्ण वर्ष 1943-2020

यूको मासिकी भागलपुर

अंचल प्रबंधक का संदेश

प्रिय साथियो

वित्तीय वर्ष 2020-21 की अंतिम तिमाही समाप्त हो चुकी है| वित्तीय वर्ष 2020-21 के वार्षिक परिणामों की घोषणा हो चुकी है| हम सभी ने पूरे प्रयास किए जिसके फलस्वरूप 31 मार्च 2021 के लिए अंचल तथा सम्पूर्ण बैंक का व्यवसायिक परिणाम काफी अच्छा रहा| यदि हम वित्तीय वर्ष 2020-21 के परिणामों की चर्चा करें तो बैंक का कुल परिचालन लाभ रु. 5420 करोड़ रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना मे 12 प्रतिशत अधिक है| बैंक ने इस उपलब्धि पर सभी यूकोजन को 10 दिनों के पीएलआई का भुगतान किया है|

निश्चित रूप से हम सभी इसके हकदार थे| लेकिन, हमे और अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है ताकि हम अधिकतम प्रोत्साहन के रूप मे 15 दिनों की पीएलआई प्राप्त कर सकें| वित्तीय वर्ष 2021-22 मे हमे सुनियोजित रणनीति के तहत बेहतर लाभ अर्जित करना है ताकि अधिकाधिक प्रोत्साहन राशि प्राप्त कर सकें |

वित्तीय वर्ष 2020-21 मे बैंक का शुद्ध लाभ रु 167 करोड़, कुल एनपीए रु० 4389 करोड़ (3.94%) रहा| वित्तीय वर्ष 2020-21 मे बैंक का ब्याजगत कुल आय रु० 14446 करोड़ तथा ब्याज़ेत्तर आय रु० 3720 करोड़ रहा | वित्तीय वर्ष 2020-21 में बैंक का कुल आय रु० 18166 करोड़ रहा |

ऋण वसूली के क्षेत्र मे हमारे अंचल का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा है| एनडीएनडी योजना मे भागलपुर अंचल का अपनी श्रेणी के अंचलों मे प्रथम स्थान रहा है| यह परिणाम आपकी कर्तव्यनिष्ठा का परिचायक है| इसका सम्पूर्ण श्रेय भागलपुर अंचल के यूकोजन को जाता है| हालांकि, कुछ ऐसे क्षेत्र भी है जिनमे हमे कुछ बेहतर प्रदर्शन की आशा थी| यदि अंचल की सभी शाखाएं कासा के लिए नए बचत व चालू खाते खोलने के लक्ष्य को भी पूरा कर पाते तो जमा क्षेत्र जमा मे वृद्धि को और बेहतर कर सकते थे | हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए नए वित्तीय वर्ष मे हम व्यवसाय की प्रत्येक क्षेत्र मे वृद्धि दर हासिल करेंगे | साथ ही, जो शाखाएँ अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाई है, उन्हे इसी माह के भीतर एक बेहतर कार्य-योजना बना कर लग जाना चाहिए |

प्रोन्नति परीक्षाओं और साक्षात्कारों का दौर पूरा हो चुका है| हमारे बैंक ने इस प्रक्रिया को पूरा करने में अप्रत्याशित तीव्रता दिखाई है, जिससे पता चलता है कि हमारी संस्था तथा उच्च प्रबंधन हमारे प्रयासों का प्रतिफल देने मे कितना तत्पर है, हमारे कैरियर के विकास के लिए कितना जागरूक है| जिन साथियों को प्रोन्नति प्राप्त हुई है उन्हे हार्दिक बधाई! प्रोन्नति की खुशियाँ मनाने के बाद अब हमे नई जिम्मेदारियों का स्वागत करना है| अधिक क्षमता के साथ तथा उत्कृष्ठ भावनात्मक स्तर से बैंक एवं ग्राहकों की सेवा करनी है तथा भविष्य मे और अधिक ऊंचे स्तर के नेतृत्व से संबन्धित उत्तरदायित्वों को निभाने हेतु खुद को तैयार भी करना है| जिन साथियों को इस बार प्रोन्नति परीक्षा मे सफलता नहीं मिल पाई, उन्हे अगली बार अधिक परिश्रम करके अपनी सफलता को सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए |

वर्तमान के कोविड-19 के विषम परिस्थिति मे सभी की सुरक्षा को ध्यान मे रखते हुए हमे, बैंक के आईटी उत्पादों को ग्राहकों को प्रत्येक ग्राहक तक पहुंचाना है| हमारे बैंक मे ऐसे बहुत सारे आईटी उत्पाद है जिसके बल पर हम ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों को बेहतर ढंग से प्रस्तुत कर अपना स्थान बना सकते है| हम उन उत्पादों का बेहतर ढंग से तभी प्रचार कर सकते है जब हम उनका स्वयं उपयोग करें |

आइए, हम सब मिलकर इस मुश्किल घड़ी मे **"एक टीम एक स्वपन"** के मंत्र के साथ बैंकिंग व्यवसाय मे वृद्धि का प्रयास करें |

अंत मे यही कहना चाहूँगा कि सकारात्मक रहे, तन्मय होकर अपने योग्य कर्म करते रहे, जिसका सुपरिणाम आपको अवश्य मिलेगा| मेरी यही कामना है कि आप सभी स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें !

सुभाष चंद्र मोहापात्रा
अंचल प्रबन्धक

सक्षम हैं हम, जीतेंगे हम

यूको मासिकी

अंचल की शाखाओं मे कार्यरत कर्मियों तथा विभिन्न कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के द्वारा किए गए कार्यों का प्रदर्शन व विभिन्न गतिविधियों का चित्रण

प्रकाशन माह
जून 2021

संरक्षण
श्री सुभाष चन्द्र मोहापात्रा
उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख

मार्गदर्शन
श्री निरूपम कुमार राय
उप अंचल प्रबंधक

सहयोग
अंचल कार्यालय के सभी सदस्यगण

पत्राचार का पता

अंचल कार्यालय भागलपुर ,एस. के. तरफ़दार रोड , आदमपुर चौक , भागलपुर -812001
दूरभाष 0641-2301752,2302086 ईमेल- zo.bhagalpur@ucobank.co.in

डिजिटल उत्पादों में शाखाओं का प्रदर्शन

माह – मई

माह के दौरान जारी इंटरनेट बैंकिंग

शाखा का नाम	शाखा पहचान	जारी इंटरनेट बैंकिंग की संख्या
कहलगाँव	1940	8
भागलपुर	0193	6
ढोलबज्जा	1249	6
चमेलीचक	1703	6
तिलकामांझी	1743	6

माह के दौरान मोबाईल बैंकिंग

शाखा का नाम	शाखा पहचान संख्या	जारी मोबाइल बैंकिंग की संख्या
भनरा	1683	37
धौरैया	953	36
सुभानपुर	2477	27
ढोलबज्जा	1249	26
श्यामबाज़ार	1245	24

माह के दौरान यू.पी.आई.

शाखा का नाम	शाखा पहचान संख्या	जारी यू.पी.आई. की संख्या
किसुनदासपुर	1646	12
ढोलबज्जा	1249	11
धौरैया	953	10
विजयहाट	1214	8
बांका	1799	8

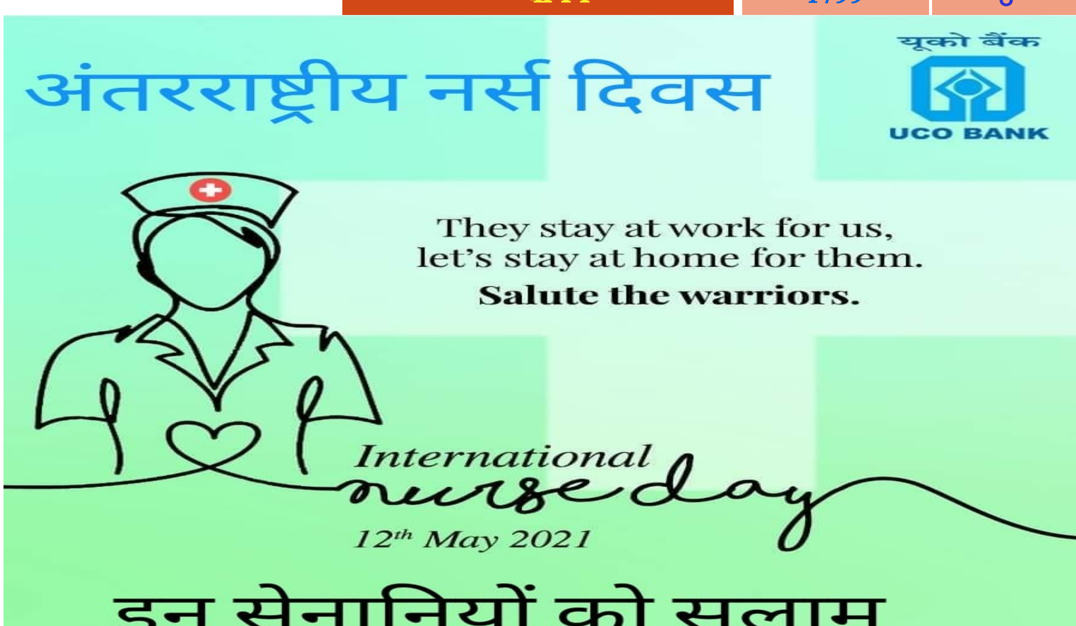

कोरोनाकाल में हिन्दी

कोरोनाकाल में
हिन्दी का प्रयोग घटा है।
' दहशत ' की जगह
'पैनिक ' शब्द आ डटा है।
वायरस देखकर -
हिन्दी शब्दों की ख़पत घटी है।
अब हमारी बातचीत में,
विटामिन-सी, जिंक,
स्टीम और इम्यूनिटी है।
उधर 'सकारात्मक' की जगह,
'पॉजिटिव' शब्द ने हथियाई है।
इधर 'नेगेटिव' होने पर भी ,
खुशी है, बधाई है ।
अब ज़िन्दगी में
'महत्वपूर्ण कार्य' नहीं
'इम्पोर्टेन्ट टास्क' हैं।
हमारे नए आदर्श अब हैंडवाश,
सेनिटाइजर और मास्क हैं ।
हिन्दी के अनेक शब्द सेल्फ
क्वारेन्टीन हैं।
कुछ आइसोलेशन में हैं ,
कुछ बेहद ग़मगीन हैं ।
मित्रों, इस कोरोना काल में ,
हमारे साथ,
हिन्दी की शब्दावली भी डगमगाई है।
वो तो सिर्फ " काढ़ा " है ,
जिसने हिन्दी की जान बचाई है।

पीपीएफ़ खातों मे प्रदर्शन

शाखा का नाम	शाखा पहचान संख्या	पीपीएफ़ खातों की संख्या
मंदार	1276	80
भागलपुर	0193	70
सबौर	487	66
भरकों	1241	63
तिलकामांझी	1743	60

कविता

हो तिमिर कितना भी
गहरा;
हो रोशनी पर लाख
पहरा;
सूर्य को उगना पड़ेगा,
फूल को खिलना पड़ेगा।

हो समय कितना भी
भारी;
हमने ना उम्मीद हारी;
दर्द को झुकना पड़ेगा;
रंज को रुकना पड़ेगा।

सब थके हैं, सब अकेले;
लेकिन फिर आएंगे मेले;
साथ ही लड़ना पड़ेगा;
साथ ही चलना पड़ेगा।

- रामधारी सिंह दिनकर

डिजिटल उत्पादों शाखाओं का प्रदर्शन

माह – मई

माह के दौरान जारी एटीएम कार्ड

शाखा का नाम	शाखा पहचान संख्या	जारी एटीएम कार्ड की संख्या
श्यामबाजार	1245	86
ढोलबज्जा बाज़ार	1249	74
धौरैया	0953	73
बांका	1799	68
तुलसीपुर	1232	59

शाखाओं मे आतंकवाद विरोधी प्रतिज्ञा का दृश्य

अंचल कार्यालय मे आतंकवाद विरोधी प्रतिज्ञा का दृश्य

बैंक ने डिजिटल बैंकिंग सेवाओं को 24*7 कहीं भी, कभी भी तुरंत अक्षम / सक्षम करने के लिए 'यूको सिक्योर' मोबाइल एप लॉन्च किया है।

"यूको सिक्योर'' एप डिजिटल बैंकिंग लेनदेन में ग्राहक सुरक्षा को बढ़ाता है क्योंकि ग्राहक अपने बैंक की डिजिटल बैंकिंग सेवा को अस्थायी रूप से तब रोक सकते हैं जब उन्हें आवश्यकता न हो। इस प्रकार जालसाज डिजिटल बैंकिंग सेवा (जब सेवा अक्षम मोड हो) का दुरुपयोग नहीं कर पाएंगे, भले ही उपभोक्ता के विवरण से समझौता किया गया हो। जैसे ही ग्राहक को सेवा का उपयोग करने की आवश्यकता होती है ,तत्काल आवश्यक सेवा सक्षम की जा सकती हैं।

विशेषता

1)''यूको सिक्योर'' एप एंड्रॉयड ओएस एवं आईओएस प्लेट्फॉर्म के साथ मोबाइल हैंडसेट पर इंस्टॉल किया जा सकता है।

2) बैंक के ग्राहक पंजीकृत मोबाइल नंबर (ओटीपी के माध्यम से) या डेबिट कार्ड के विवरण का उपयोग करके लॉगिन पिन को पंजीकृत और सेट कर सकते हैं।

3) यदि किसी भी वैकल्पिक चैनल के सेवा की आवश्यकता न हो तो ग्राहक बिना किसी कॉल या शाखा गए तुरंत दिए गए किसी भी वैकल्पिक चैनल के सेवा को अक्षम कर सकता है|
डेबिट कार्ड (एटीएम, पीओएस,ई- कॉमर्स, घरेलू, अंतर्राष्ट्रीय), एम- बैंकिंग, ई- बैंकिंग, भीम यूको यूपीआई, यूको पे प्लस

4)इसी तरह, जब भी किसी एडीसी सेवा की आवश्यकता होती है तो घर बैठे आराम से या चलते फिरते सेवा को तुरंत सक्षम किया जा सकता है।

5) ग्राहक के पास सभी एडीसी सेवाओं (डेबिट कार्ड को छोडकर) को एक बार में ब्लॉक करने का विकल्प है।

सुविधा का प्रयोग

सुविधा के उपयोग हेतु मोबाइल फोन पर पंजीकरण करते समय नियम और शर्तों को स्वीकार करने का विकल्प प्रपट होता है : यथा ग्राहक :

- बैंक द्वारा समय समय पर प्रस्तावित वित्तीय और गैर वित्तीय लेनदेन के लिए यूको सिक्योर का प्रयोग करने के लिए सहमत है।
- इसके अलावा अटल रूप से बैंक को उन खातों को डेबिट करने के लिए अधिकृत करता है जो MPIN का वचनबद्ध तरीके से प्रयोग करके सभी लेनदेन/सेवाओं में यूको सिक्योर के लिए सक्षम किए गए हैं।
- बैंक द्वारा प्रस्तावित UCO SECURE के सुचारू संचालन के लिए खाता संख्या और मोबाइल फोन नंबर को मैप करने के लिए और अपने या किसी तीसरे पार्टी के सर्वर में मैपिंग रिकॉर्ड को संरक्षित और उपलब्ध कराने के लिए बैंक को स्वविविवेक पर इस तरह के डेटा का प्रयोग करने के लिए अधिकृत करता है।
- इस बात से सहमत है कि वह जानता है और स्वीकार करता है कि बैंक द्वारा प्रस्तावित यूको सिक्योर उसे बैंक द्वारा निर्धारित सीमा के भीतर MPIN का प्रयोग कर लेन देन के लिए सक्षम बनाता है और इसे गोपनीय लेन देन माना जाएगा।
- इस सुविधा का प्रयोग केवल मोबाइल सेवा प्रदाता के साथ ही अपने नाम से सही और वैध रूप से पंजीकृत करने के लिए सहमत है और सुविधा का प्रयोग केवल प्रयुक्त पंजीकृत मोबाइल फोन नंबर के माध्यम करने हेतु वचनबद्ध है।
- इस बात से सहमत है कि जब सूचना प्रोद्यौगिकी अधिनियम, 2000 में यह प्रावधान किया गया है कि अभिदाता अपने डिजिटल हस्ताक्षर लिखकर इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड प्रमाणीकृत कर सकता है जिसे अधिनियम के तहत कानूनी मान्यता प्रदान की गई है|

हिमालय का कवि

गोपाल सिंह नेपाली

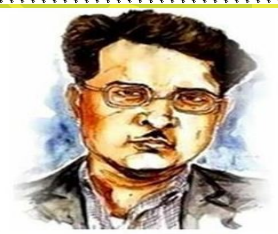

कर्णधार तू बना तो हाथ में लगाम ले
क्रांति को सफल बना नसीब का न नाम ले
भेद सर उठा रहा, मनुष्य को मिटा रहा
गिर रहा समाज, आज बाजुओं में थाम ले!!
त्याग का न दाम ले
दे बदल नसीब तो..गरीब का सलाम ले !

रामविलास शर्मा, इन्दौर(हिमालय का आह्वान), वीरेंद्र मिश्र(हिमालय छीन ले), पद्मसिंह शर्मा कमलेश (ओ हिमालय के सपूतो), विद्यानिवास मिश्र (अस्ति की पुकार हिमालय (निबंध), रोरिक (हिमालय पर आधारित ढेरों चित्र बनाने वाला पश्चिमी चित्रकार) प्रभृति के नाम आदर के साथ लिये जा सकते हैं।

एक ऐसे ही कवि-गीतकार का नाम है गोपाल सिंह 'नेपाली' । औरों ने तो हिमालय पर मात्र एक या दो कविताएँ/ गीत लिखकर इतिहास में अपना नाम सुरक्षित करा लिया, जबकि नेपाली ने 'हिमालय ने पुकारा' (1963) नाम से प्रकाशित अपना पूरा काव्य- संग्रह ही हिमालय को समर्पित कर दिया। इस संग्रह की चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा, हिमालय और हम, इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो, भारत माता की प्रभाती, है ताज हिमालय सिर पर, तुम उसको गोली दो, हिन्दुस्तान की ललकार के अतिरिक्त 'पंचमी' से 'हिमांचल' (1942), 'नीलिमा' (1944) से 'तरु वृक्षों की पाँति घनी यह', उमंग (1934) से 'नवीन नेपाल' उनकी उल्लेखनीय हिमालय-विषयक रचनाएँ हैं।

इनमें अधिकांश कविताएँ तब की हैं, जब देश संकट की स्थिति से गुजर रहा था। यह संकट था भारत के लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश (नेफा) पर चीन का अप्रत्याशित व विश्वासघाती हमला। इसका आभास उन्हें पहले ही हो गया था। इसीलिए तो जुलाई, 1957 में रचित कविता 'नजर है नई तो नजारे पुराने' की इन पंक्तियों के माध्यम से कहना प्रारम्भ कर दिया था-

''हुआ देश की खातिर, जनम है हमारा
कि कवि हैं, तड़पना करम है हमारा
कि कमजोर पाकर मिटा दे न कोई
इसी से जगाना धरम है हमारा
कि मानें न मानें, हमें आप अपना
सितम से हैं नाते हमारे पुराने
नई रोशनी को मिले राह कैसे
नजर है नई तो, नजारे पुराने।''

अप्रैल, 1959 में रचित 'चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा' शीर्षक गीत प्रथम चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर आधारित अपेक्षाकृत लम्बी रचना है। लोकप्रिय धारणा है कि चीन ने अक्टूबर, 1962 में पहला आक्रमण किया था। लेकिन, सच्चाई यह है कि चीनियों ने पहला हमला 1959 में ही किया था। गोपाल सिंह नेपाली जैसे सजग और राष्ट्रवादी कवि-गीतकार ने इसी परिप्रेक्ष्य में अपनी महत्त्वपूर्ण हिमालय-विषयक रचनाएँ कीं। उनकी दृष्टि में हिमालय भारत का गर्वोन्नत भाल है। उस पर किसी तरह का आक्रमण भारत के अस्तित्व पर आक्रमण है।

पाँच-पाँच पंक्तियों के बारह बंधों में रचित आलोच्य कविता के केंद्र में लद्दाख पर चीनी आक्रमण से उत्पन्न सात्विक आक्रोश ही तो है-

'कह दो कि हिमालय तो क्या, पत्थर भी न देंगे
लद्दाख की क्या बात है, बंजर भी न देंगे
आसाम हमारा है रे, मरकर भी न देंगे
है चीन का लद्दाख तो तिब्बत है हमारा
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।

इस गीत में कवि ने हिमालय को 'हिंद की दीवार', 'शांति की मीनार', 'धरती का मुकुट', 'भारत का अचल भाग्य' जैसे विशेषणों से सम्बोधित किया है। फिलहाल इसे 'लाल' चीन की कुदृष्टि लग गई है, जिस से बचने के लिए भारत को अहिंसक नीति को छोड़कर बन्दूक उठानी पड़ी-

इतिहास पढ़ो समझो तो यह मिलती है शिक्षा
होती न अहिंसा से कभी देश की रक्षा
, , ,

जारी है

हिमालय का कवि

गोपाल सिंह नेपाली

तलवार उठा लो तो बदल जाये नजारा

कवि ने देश भर में घूम-घूमकर यह गीत गाया था। मुजफ्फरपुर के एक कवि-सम्मेलन में तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ जाकिर हुसैन इस गीत को सुनकर इतने प्रभावित हुए कि इसे भारत भर में हिंदी के अलावा उर्दू में छपवाकर वितरित करने की इच्छा जताई। यही नहीं, आसाम रायफल्स के तत्कालीन कमांडर-इन-चीफ ने अपने सैनिकों के सामने इस रचना के पाठ के लिए नेपाली जी को लिखित आमंत्रण भेज दिया। देखते-देखते यह भारत का प्रयाण-गीत (मार्चिंग सोंग) बन गया।

जनवरी,1958 में रचित 'हिमालय और हम' शीर्षक कविता में नेपाली ने गिरिराज हिमालय को चालीस करोड़ भारतवासियों के अक्षय व आत्मीय प्रेरणा-स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें उन्होंने भारत के साहित्यिक सौंदर्य के साथ-साथ ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक समृद्धियों व छटाओं को एक साथ दिखाया है।

गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है।
चालीस करोड़ों का जत्था, गिर-गिरकर भी उठ जाता है।

कवि ने हिमालय की सर्वोच्च चोटी को 'सकल धरती का सरताज', 'अरुणोदय और संध्या की लाली', 'भारत का ऊँचा शीश', 'उत्तर की मीनार', 'जगत भर का पहरेदार', 'लाखों लोगों के सुखों का रखवाला', 'मन का दानी', 'गूँगे का मुख', 'गौरीशंकर का निवास-स्थल', 'गंगा का उद्गम-स्रोत'- जैसे विशेषणों से भूषित गौरवराट् के रूप में प्रस्तुत किया है।

आगे कवि ने हिमालय के पराक्रम का बखान करते हुए लिखा कि इससे टकराने वाले बादल पानी-पानी हो जाते हैं। प्रतीकार्थ यह कि भारत के दुश्मनों का हौसला पस्त हो जाता है। कुल मिलाकर, हिमालय हमारा गौरव है, हमारी पहचान है। अपनी आँखों में जो व्यक्ति इसे बसा लेता है, वह अपने सिर पर समस्त 'गगन' को उठा लेता है। ऐसे हिमगिरि को भूलने वाला देश निश्चित ही, परतंत्र होकर दयनीय जीवन जीता है--

हम कभी हिमालय को भूले, तो दीन हुए, परतंत्र हुए
फिर पुण्य जगा बलिदानों का, तो आगे बढ़े, स्वतंत्र हुए

कविता की वर्ण्य वस्तु से पता चलता है कि तब तक चीन ने हिमालय-प्रांत को पददलित नहीं किया था, लेकिन घुसपैठ की योजना बना ली थी।

'टकराते हैं इससे बादल, तो खुद पानी हो जाते हैं
तूफान चले आते हैं तो, ठोकर खाकर सो जाते हैं'-

इस कवितांश में प्रयुक्त 'बादल' और 'तूफान' चीन और पाकिस्तान-जैसे घातक मंसूबों वाले भारत के दुश्मन देशों की तरफ साफ-साफ इशारा करते हैं।

इन चीनी लुटेरों को भारत से निकालो' शीर्षक कविता चीनी आक्रमण के ठीक बाद की लिखी प्रतीत होती है। इसके रचना-काल के स्थान पर अक्टूबर, 1962 उल्लिखित है। ज्ञातव्य है कि चीनी आक्रमण 20 अक्टूबर को हुआ था। इसका सीधा अर्थ है कि यह कविता 20 से 31 के बीच की किसी तारीख को लिखी गई है।

ध्यातव्य है कि चीनियों का पहला आक्रमण लद्दाख पर हुआ था, जबकि दूसरा नेफा (आज का अरुणाचलप्रदेश) पर। कवि ने गुस्से में लिखा-

"लद्दाख चलो, चीन जहाँ घुसके अड़ा है,
नेफा को चलो, चोर जहाँ छुपके खड़ा है।"

25 छंदों में रचित यह लम्बी कविता एकतरह से प्रयाण-गीत है। सम्भवतः सीमा-समस्या पर रचित कविताओं में सर्वाधिक प्रभविष्णु व प्रतिनिध्यात्मक है, जिसमें कवि ने भारतीयों को जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्र इत्यादि की क्षुद्र सीमाओं से निकलकर चीनियों से लड़ने हेतु आह्वान किया है-

"मंदिर से चलो थाम के बंदूक पुजारी
मस्जिद से चलो साथ ले तलवार दुधारी
राजपूत चलो, सिक्ख चलो, जाट चलो रे
घर जिसने जलाया है चिता उसकी जला लो
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो।"

नेपाली ने चीनी नेतृत्व को 'चोर', 'कम्युनिज्म को बदनाम करने वाला', 'साम्यवाद की आड़ में साम्राज्यवाद की नींव डालनेवाला', धूर्त और

जारी है

हिमालय का कवि

गोपाल सिंह नेपाली

विश्वासघाती कहकर तीखी भर्त्सना की है। जो हो, लेकिन केन्द्र में है हिमालय ही।

नवम्बर, 1961 में रचित 'हिन्दुस्तान की ललकार' चीनी आक्रमणजन्य देशव्यापी आक्रोश से उत्पन्न महत्त्वपूर्ण प्रयाण-गीत है। इस कविता की अतिरिक्त विशेषता यह है कि इसमें कवि ने गढ़वाल और नेपाल--दोनों का एक साथ उल्लेख किया है। इन दोनों जगहों से उनका संबंध भी रहा है। जो हो, इस प्रयाण-गीत में हिमालय का मात्र एक बंद में उल्लेख हुआ है। इसमें उसे भारत के द्वार और ढाल (रक्षक) के रूप में दिखाया गया है--

''जब से हुई दुनिया शुरु
चन्दा बना तारे बने
नदियाँ, हिमालय, सिन्धु
हिन्दुस्तान के द्वार बने
तब से हिमालय है खड़ा सटकर हमारी ढाल से
ओ चीनियो! जाओ निकल लद्दाख से नेपाल से।''

'है ताज हिमालय के सिर पर' (जुलाई , 1958 शीर्षक कविता भारत की तत्कालीन देशी रियासतों में वास्तविक जनतंत्र स्थापित होने के ठीक बाद रची गई थी। कहते हैं, भारत के इन देशी राज्यों ने भारत के राष्ट्रीय, सामाजिक और आर्थिक सामाजिक और आर्थिक जीवन में कई तरह की कुरूपताएँ पैदा कर रखी थीं; जैसे- विपन्नता, ऊँच-नीच की भावना आदि। ये देशी रियासतें शोषण और भेदभाव पर टिकी थीं। इतना ही नहीं, इन रियासतों के तथाकथित ताज विदेशी हुकूमत के पिट्ठू बने हुए थे। भारत के तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल की दूरदर्शिता से इन सैकड़ों रियासतों का भारतीय संघ में विलय हो गया था। इससे देश में हर्ष का वातावरण छा गया था। गरीबों ने राहत की साँस ली थी। आलोच्य कविता इसी भावना की सुन्दर अभिव्यक्ति है।

"आजाद परिन्दों से कह दो, अब यहाँ विदेशी राज नहीं
है ताज हिमालय के सिर पर, अब और किसी का ताज नहीं।''

कवि ने कहना चाहा है कि अब देश का एक ही ताज है और वह है हमारा सरताज हिमालय। हिमालय यहाँ समस्त भारत का प्रतीक बनकर आया है-- हमारी एकता, हमारे समेकित बंधुत्व का प्रतीक।

'तुम उसको गोली दो' (नवम्बर, 1962) चीनी आक्रमण के ठीक बाद की रचना है। अपनी तरह के छोटे छंद में रचित इस कविता का केन्द्रीय स्वर राष्ट्रीय पौरुष की अभिव्यक्ति है, जिसका माध्यम पुनः एक बार हिमालय बना है।

''आज बाँह फड़की है, छाती भी धड़की है
गोद में हिमालय की, रण-बिजली कड़की है।''

साथ ही कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से लापरवाहों, भीरुओं और धनलोलुपों को कड़े शब्दों में फटकारा है--

''चर्चा तू करता है, साम्यवाद, हिंसा की
सर्वोदय, पंचायत, ट्रस्ट की, अहिंसा की
लुटती है आजादी, तुझको न चिन्ता है
सोते में जगते में, तू रुपये गिनता है।
दौड़ चलो नेफा को, देश जहाँ लुटता है
खून सी धरती पर, नाम जहाँ उठता है
तिब्बत की सीमा से, हिन्द यहीं मिलता है।''

फरवरी, 1963 में रचित नेपाली की अत्यंत लोकप्रिय कविताओं में एक 'भारत माता की प्रभाती' में कवि ने हिमालय को घायल, पददलित और अपमानित रूप में दिखाया है। कहा जा चुका है कि भारतीयों के लिए हिमालय पर्वतराज मात्र नहीं, अपितु भारतीयता का, उसके समग्र अस्तित्व का प्रतीक है। इसलिए,हिमालय को लगने वाली कोई भी चोट समस्त भारत की चोट होती है। शांति भंग होती है हिमालय की और अशांत हो उठता है भारत। इसी से पता चलता है कि कितना महत्त्वपूर्ण है हमारा हिमालय! नेपाली की यही पीड़ा इन पंक्तियों में छलक पड़ी है-

''तुम लाल सोते रह गये, शंकर भी सोते रह गये
घायल हिमालय रोया, तुम घाव धोते रह गये

*****

सौन्दर्य बनाम सौन्दर्यता

हिन्दी के भाववाचक विशेष्य (संज्ञा), 'सौन्दर्य' अथवा 'चातुर्य' के स्थान पर 'सौन्दर्यता' या 'चातुर्यता' का प्रयोग देखकर आप कैसा अनुभव करेंगे? सहज अनुमेय है, अच्छा नहीं। मैं भी बुरा अनुभव करता हूँ। मेरा यह आलेख उसी अनुभव का प्रकट परिणाम है।

कहानी 'उसने कहा था' के यशोधन लेखक चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' का नाम आपमें से अधिकांश लोगों ने सुना होगा। उन्हीं की पुस्तक है 'पुरानी हिन्दी' (साहित्यागार, चौड़ा रास्ता, जयपुर; नवीन संस्करणः 2005) इसकी पृष्ठ-संख्या :23 पर उन्होंने जयमंगल सूरि का अग्रांकित वाक्यांश उद्धृत किया है-'पौरवनिताचातुर्यतानिर्जिता'। इसमें सूरि जी ने 'चातुर्य' के स्थान पर 'चातुर्यता' का आपत्तिकर प्रयोग कर रखा है। गुलेरी जी ने इस पर उपहास करते हुए लिखा- ''जयमंगल सूरि 'चातुर्यता' लिखकर हिन्दी के डबल भाववाचक का बीज बोते हैं। यही बात 'सौन्दर्यता'-प्रेमी लोगों के बारे में कही जा सकती है।

'सौन्दर्य' हिन्दी का पुंलिंग भाववाचक विशेष्य (संज्ञा) है, जिसका विकास गुणवाचक विशेषण 'सुन्दर' से हुआ है। सु (उपसर्ग)+उन्दी->उन्द् (क्लेदने) + अरः (प्रत्यय) = सुन्दरः का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ होता है- सुष्ठ उनत्ति-आर्द्रीकरोति-- द्रवीकरोति चित्तमिति सुन्दरः, अर्थात् जो कोई व्यक्ति, पशु, स्थान या पदार्थ मनुष्य के चित्त को अच्छी तरह आर्द्र कर दे- द्रवीभूत कर दे- पिघला दे, वह 'सुन्दर' कहलाता है। संस्कृत/हिन्दी में इसके कई समानार्थी शब्द प्रचलित हैं; यथा- मनोहर, रुचिर, चारु, साधु, शोभन, मनोरम, रुच्य, रुचिकर, मनोज्ञ, मंजु, मंजुल, भद्रक, रमणीय, पेशल, अभिराम, सुमन, सुभग इत्यादि। 'अमरकोषः में इसके लिए ग्यारह शब्द मिलते हैं। देखिए-

''सुन्दर रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम्।
कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मंजु मंजुलम्।।
(तृतीय काण्डम् विशेष्यनिघ्नवर्गः)

सुन्दरस्य भावः सौन्दर्यम् (एकवचन नपुंसक लिंग), अर्थात् सुन्दर होने का भाव सौन्दर्य कहलाता है। हिन्दी में यह भाववाचक विशेष्य है, जिसका प्रयोग एकवचन पुंलिंग में होता है। संस्कृत में इसकी निर्माण-प्रक्रिया थोड़ी लम्बी है। षष्ठ्यन्त गुणवाचक प्रातिपदिक 'सुन्दर' में 'ष्यञ्'/(य) प्रत्यय के योग से 'सुन्दरस्य य' बनता है। पुनः, पूर्ववत् सुप-लोप, अजादि वृद्धि तथा अन्त्य-लोप होकर प्रथमा विभक्ति एकवचन नपुंसक लिंग में 'सौन्दर्यम्' का रूप ग्रहण कर लेता है। आगे चलकर ध्वनिलोप-नियम के अन्तर्गत 'म्' का लोप होने से वही हिन्दी में 'सौन्दर्य' का रूप ले लेता है।

विशेष्य बनाने के लिए कई अन्य प्रत्यय हैं; यथा-

1. त्वम् (त्व); उदाहरण - गुरु+त्वम् = गुरुत्वम् (हिन्दी में गुरुत्व)
2. तल् (ता) ; उदाहरण - गुरु+तल् = गुरुता (हिन्दी में यही रूप)
3. इमनिच् (इमा); उदाहरण- गुरु+इमनिच् = गरिमा (हिन्दी में यही रूप)
4. अण् (अवम्); उदाहरण - गुरु+अण्= गौरवम् (हिन्दी में गौरव)
5. यत् (य); उदाहरण: मूलम्+यत् = मूल्यम् (हिन्दी में मूल्य)

इसी तरह, सुन्दरः+ष्यम् = सौन्दर्यम् (हिन्दी में सौन्दर्य)-रूप सिद्ध होता है। इसी नियम का अनुसरण करते हुए हम अन्य रूप भी साधते हैं; जैसे - ईश्वरः+ष्यञ् = ऐश्वर्यम् (ऐश्वर्य), चपलः+ ष्यञ् = चापल्यम् (चापल्य), मनुष्यः+ष्यञ् = मानुष्यम् (मानुष्य), मन्थरः +ष्यञ् = मान्थर्यम् (मान्थर्य), कुमारः+ष्यञ् = कौमार्यम् (कौमार्यम् (कौमार्य), मित्र + ष्यञ् = मैत्र्यम् (मैत्र्य), शुक्लः+ष्यञ् = शौक्ल्यम् (शौक्ल्य), निपुणः +ष्यञ् = नैपुण्यम् (नैपुण्य), दूतः + ष्यञ् = दौत्यम् (दौत्य), मूर्खः + ष्यञ् = मौर्ख्यम् (मौर्ख्य), सदृशः + ष्यञ् = सादृश्यम् (सादृश्य) इत्यादि। जहाँ तक 'सौन्दर्यता' का प्रश्न है, यह व्याकरणिक दृष्टि से सर्वथा असाधु प्रयोग है। जब 'सुन्दर' में 'ष्यञ्' प्रत्यय (तद्धित) लगाकर भाववाचक विशेष्य (एब्सट्रैक्ट नाउन) 'सौन्दर्य' बना ही लिया, तब स्त्रीलिंग प्रत्यय 'तल्' (ता) जोड़कर भाववाचक का भाववाचक विशेष्य 'सौन्दर्यता' (सुन्दरः + ष्यञ् +तल् (ता)) बनाना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? इससे न केवल शब्द का अपव्यय होता है, वरन् समय और ऊर्जा का भी। ऐसा करके हम स्वयं को उपहास का पात्र भी बना लेते हैं, जैसा कि जयमंगल सूरि ने चतुरः + ष्यञ् + तल् = चातुर्यता का प्रयोग कर स्वयं को उपहासास्पद बना लिया। उन्हें चतुरः का भाववाचक विशेष्य बनाने के लिए 'ष्यञ्' और 'तल्' में से किसी एक तद्धित प्रत्यय का ही प्रयोग करना चाहिए था; यथा- चतुरः + ष्यञ् = चातुर्यम् अथवा चतुरः + तल् (ता) = चतुरता।

अतएव, आप सौन्दर्य, सुन्दरता, सुन्दरत्व और सुन्दरिमा में से किसी एक का ही प्रयोग करें। किन्तु, ध्यान रखिए कि इनमें से प्रथम दो 'सौन्दर्य' और 'सुन्दरता' ही प्रचलन में हैं। 'सुन्दरत्व' और सुन्दरिमा' व्याकरणिक दृष्टिकोण से शुद्ध होते हुए भी प्रचलन में नहीं हैं या फिर विरल रूप में हैं।

अलटरनेट डिलीवरी चैनल

वर्तमान बैंकिंग की मांग

वैकल्पिक सुपुर्दगी माध्यम यानि अलटरनेट डिलीवरी चैनल वर्तमान समय की मांग है | यह बात निर्विवाद रूप से सच है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे डिजिटल बैंकिंग के बिना बैंकिंग व्यवसाय कल्पना कोरी प्रतीत होती है | बैंकिंग प्रणाली मे जो पिछले 10-15 वर्षों मे जो दूरगामी परिवर्तन हुए है , वे अधिकांशत: सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र मे आए नव-प्रवर्तनों के कारण ही संभव हो पाया है | पहले अधिकांश बैंकिंग व्यवसाय जैसे लेन-देन , राशि अंतरण , ऋण प्रदायगी की सूचनाएँ , भुगतान लिखत आदि तथा शाखा कार्यालयों के कार्यनिष्पादन एवं अन्य ब्योरों से संबंधित सूचनाएँ कागज के सहारे तथा डाक आवागमन के भरोसे थी | जिसमे समय भी अधिक लगता था तथा खर्च और मानवीय कार्य पर निर्भरता ज्यादा थी | जैसे जैसे बैंक ने मैनुअल बैंकिंग को पीछे छोड़ते हुए प्रोद्योगिकी की तरफ कदम बढ़ाया वैसे ही न केवल परिचालन लागत कम हुआ , बल्कि मानवीय प्रयास से किए जाने वाले अधिकांश कार्य कंप्यूटर आदि उपकरणो के जरिए और भी कार्यकुशलता अत्यधिक अचूकता से होने लगी | अब तो सिविल, क्रिफ आदि जैसे सार्वजनिक रूप से उपलब्ध विवरण भावी ग्राहकों के साख के आकलन हेतु आसानी से प्राप्त हो जाते है, साथ ही बैंकों की आंतरिक रिपोर्ट के जरिए आंतरिक और बाह्य कामकाज मे बिना किसी भी प्रकार के मानवीय हस्तक्षेप के बहुत से कार्य विश्वसनीयता और प्रमाणिकता के साथ अविलंब सम्पन्न हो रहे है | गलत तरीको से कपट का प्रयास करनेवाले लोगो के लिए आर्थिक तथ्यों को छुपना कठिन व दुष्कर होता जा रहा है और कार्यों मे पारदर्शिता को बढ़ावा मिल रहा है|

बैंकिंग कार्यप्रणाली के इतर यदि भुगतान के जरियों की बात करें तो उसमे भी क्रांति आई है| सबसे पहले एटीएम प्रचलित और प्रचारित किए गए थे, जिनके जरिये शाखा मे जाए बिना ग्राहकों को नकदी उपलब्ध कराई जाने लगी | इसके बाद मल्टीसिटी चेक श्रृंखला , टेलीट्रान्सफर ,आरटीजीएस/ एनईएफ़टी आदि का प्रचलन हुआ जिसमे शाखा मे जाना तो पड़ता था परंतु आधार शाखा पर जाने की विवशता दूर हो गयी| इसके कुछ समय बाद ई-बैंकिंग का प्रचलन हुआ | खाते की समस्त जानकारी, लेन-देन आदि से संबंधित कई कार्य ग्राहकों द्वारा घर बैठे किए जाना ही संभव कर दिया गया | इतना ही नहीं विभिन्न उत्पादों व शेयरों की खरीद होटल और यात्रा बुकिंग आदि जैसे रोज़मर्रा के काम भी ई-बैंकिंग के जरिए आसानी से होने लगे |इसी का अगला विस्तार एम-बैंकिंग के रूप मे सामने आया | एक अत्यावश्यक साधन के रूप मे मनुष्य के जीवन मे मोबाइल के स्थापित हो जाने के साथ ही, मोबाइल के जरिए बैंकिंग की हर संभव सेवा ग्राहक को 24 घंटे उपलब्ध कराने का काम हुआ है|

हमारे बैंक ने भी डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र मे खूब प्रगति की है, और हम सभी यूकोजन पर सम्मिलित रूप से यह दायित्व है कि हम अपने वैकल्पिक भुगतान माध्यमों की सुविधाओं के बारे मे अपने ग्राहकों को जागरूक बनाएँ, उन्हे इनकी आदत डलवाएं | इसका एक आंतरिक लाभ यह भी है कि इसमे बैंकर रोज़मर्रा के छूट-पूट कामों मे लगे रहने से छुट जाता है और अपने कारोबार स्तर को ऊपर उठाने , अनर्जक आस्तियों की वसूली करने और विविध सरकारी और बैंकगत्त योजनाओं के प्रचार और कारोबार के लिए ज्यादा समय निकाल सकता है | वर्तमान के कोविड-19 के आक्रांत समय मे , जब व्यक्तिगत भौतिक दूरी स्वास्थ्य सुरक्षा की अनिवार्य शर्त बन चुका है और बैंकरों को जनता के पास आर्थिक सेवाएँ पहुँचाने की आवश्यक जिम्मेवारी भी है, वैकल्पिक साधनों के उपयोग को ग्राहक समुदाय मे लोकप्रिय बनाना स्वास्थ्य और व्यवसाय दोनों दृष्टियों से बहुत महत्व रखता है | स्वास्थ्य और व्यवसाय दोनों दृष्टियों से बहुत महत्व रखता है | नई पीढ़ी तत्परता से प्रोद्योगिकी का उपयोग करती है| ऐसे मे उन्हे अपने पास रोकने का सबसे आसान साधन उन्हे अपने वैकल्पिक भुगतान माध्यमों (एडीसी) के अवगत कराते हुए इसकी सुलभता से परिचित कराना होगा | बैंक के बैंकिंग-सेवा वितरण का एक व्यापक विकल्प, बैंक मित्रों से सेवाएँ लेकर पूरा किया गया है, और बैंकिंग सेवाओं को विशेषकर ग्रामीण अछूते स्थानों मे विस्तारित किया गया है|

आइए, हम सभी मिलकर अपने ग्राहकों से अपने एटीएम डेबिट कार्ड, ई-बैंकिंग और एम-बैंकिंग को अच्छी तरह प्रयोग करवाएँ, ग्राहकों को इनके प्रयोग की आसानी और फायदे बताएं, जिनसे आय भी अर्जित होती है| शाखाओं द्वारा प्रतिदिन न्यूनतम 50 एटीएम कार्ड वितरण और न्यूनतम 10 ई-बैंकिंग/एम बैंकिंग के पंजीकरण के लक्ष्य हेतु प्रयास करने का अर्थ वास्तव मे हमारे लिए सुकून भरा होगा और सुव्यवस्थित बैंकिंग सेवा का उदाहरण प्रस्तुत करेगा, जिससे अपनी मातृसंस्था के प्रति ग्राहकों का विश्वास बनाएँ रखने मे सक्षम होगे, जिसकी जरूरत निश्चित रूप से हम सभी को है|

***